आर.एन. आई पंजीयन क्रमांक
CHHHIN/2017/72506

किलोल

वर्ष 4 अंक 3, अप्रैल 2020

मूल्य-80 /-

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था

WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

H. No. 580/1 Street 17 B Durga Chowk,
Adarsh Nagar, Mowa Raipur (CG) 492007
email : wings2flysociety@gmail.com

अनुक्रमाणिका

बसंत 4

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे 4

सूरज दादा 6

बाल कैबिनेट 8

होली आई 10

फागुन तिहार 11

पानी 13

चल रे नोनी स्कूल जाबो 14

फुलवारी 16

चलो पुस्तक पढ़ें 18

कापी -पेन 21

The Milk 23

प्यारा बचपन 24

आज का श्रवण कुमार 26

पानी है अमृत 28

हुनर 29

बिटकुला के चर्चे 30

ऊंची उड़ान 32

स्कूल बंद हैं, आप क्या कर रहे हैं ? 33

गौरी की होली 35

औरत की पहचान 37

चहा 39

मेरी हो पहचान 40

तीन मछलियों की कहानी 42

CARTOON 44

मेरे स्कूल की सरकार स्कूल चलाती है 45

जीवन कौशल शिक्षा - बालिकाओं ने सीखी समानुभूति 49

विंग पायलट अभिनंदन की जय 51

कोरोना कोरोना कोरोना 53

हमर नंदावत खेल....54
नाई की समझदारी....55
Learn from nature....57
घोंसला....58
मां की ममता....60
आइये हमारे प्रेरणास्रोत के बारे में जाने....62
पहेलियाँ....64
अधूरी कहानी पूरी करो....68
सोना की होशियारी....68
चंद्रभान सिंह कंवर जी व्दारा पूरी की गई कहानी....70
कु. अरुणा लकड़ा (कक्षाआठवीं शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय, नवा पारा-कर्रा) व्दारा पूरी की गई कहानी....71
कन्हैया साहू(कान्हा)जी व्दारा पूरी की गई कहानी....72
संतोष कुमार कौशिक जी व्दारा पूरी की गई कहानी....73
अगले अंक के लिए अधूरी कहानी....74
चित्र देखकर कहानी लिखो....75
लेखक -संतोष कुमार कौशिक....76
पानी की कहानी....78
अगले अंक हेतु चित्र....80
भाखा जनउला (छत्तीसगढ़ी शब्द पहेली)....81

संपादक

डा. आलोक शुक्ला

संपादक मण्डल

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, धारा यादव, द्रोण साहू, डॉ. रचना अजमेरा, डॉ. माया नायर, रीता मंडल, कंचन लता यादव, पुर्णेश डडसेना, वृंदा पंचभाई, शिप्रा बेग

तकनीकी सहायक

पुनीत मंगल

संपादक की कलम से

प्यारे बच्चों,

होली खूब मजे के साथ मनाते हुए अब आप सभी परीक्षा की तैयारी में लग गए होंगे. प्राथमिक शालाओं के बच्चे बहुत जोश से पढना सीखने वाले काम में भी लगे हुए हैं. परन्तु कोरोना वायरस की वजह से आपके स्कूल में छुट्टी हो गयी है. इस छुट्टी के दौरान आप कोशिश करें कि घर में रहकर भी सीखने-सिखाने का कार्य करते रहें. कोरोना से पूरी तरह से सावधानी बरतते हुए छोटे-छोटे समूहों में एक दूसरे से सीखने का काम जारी रखें. हमें उम्मीद है कि आपको किलोल पत्रिका स्कूल में पढने मिल रही होगी. इसमें छपी रचनाओं को एक दूसरे को सुनाएं और कक्षा में आनंद लेवें

आपका
आलोक शुक्ला

बसंत

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे

बसंत की आई है बहार.
जवां जवां हुआ है बयार.
सतरंगी छटा छा गई.
हर दिल को भा गई.
मिल रही है आपस में.
सब सद्भावना के संग.
भर आया सबके दिल में.
आज बसंत भरा उमंग.
आओ छिड़के एक दूजे पर.
सादर सच्चा अमिट प्रेम रंग.
सबके मन में उत्साह लाई.
धरा, हरी भरी हो गई.
प्रकृति का रंग निखर उठा.
आई रे ,बरखा आई.
पत्तों पर ठहरी,

छोटी-छोटी बरखा की बूंदे.
मोती सी नजर आई.
रितु की रानी बरखा.
आई रे बरखा आई.
आई ये बरखा आई.
आई रे, बरखा आई.
आई रे, बरखा आई.
महका है मन, और शीतल है तन.
हरियाली चुनर पहनकर.
आई रे, बरखा आई.
बरखा के बूंदों से, धरती हो गई शीतल.
सब जीव जंतु के मन भी, हो गई शीतल.
काली -काली घुमड़े, बरखा रानी.
जिसे देख कर मोर का ,मन नाचे.
गड़ -गड़ बरखा की, मधुर संगीत.

सूरज दादा

रचनाकार- वृंदा पंचभाई

सूरज छुपा बादल में जाकर
समझाया तारों ने आकर.

बाहर निकलो सूरज दादा
साथ रहेंगे है यह वादा

शिशिर ने भी कहर बरपाया
सूरज डरा बाहर न आया.

कंबल, रजाई दौड़े आए
स्वेटर, जर्सी भी मुस्काए

ठंड देखकर मन घबराता,
धूप गुनगुनी सबको भाता.

सूरज दादा अब तो आओ
आकर ठंड को दूर भगाओ.

बाल कैबिनेट

रचनाकार- सुशीला साहू "शीला"

हम बच्चों का बाल कैबिनेट,
अब न चढ़ेगा किसी के भेंट.
बच्चे न होगा कोई घोटाला,
स्नेह का होगा बोलबाला.

मन में न होगा द्वेष किसी के,
काम करेंगे ख़ुशी ख़ुशी से.
बच्चे न करेंगें भ्रष्टाचार,
पवित्र होंगे उनके विचार.

हम बच्चों की बनी सरकार,
हमें मिला मंत्रियों का प्रभार.
आरोप न किसी पर लगायेगें,
पूरी जिम्मेदारी निभायेंगे.

स्वच्छ भोजन, स्वच्छ शौचालय,
स्वच्छ वातावरण हमारा विद्यालय.
बनेगी सुंदर पाठशाला हमारी,
बाल कैबिनेट की है जिम्मेदारी.

मिलकर मंजिल तक जायेंगे,
शिक्षा से हम देश सजायेंगे.
बाल कैबिनेट की यही पुकार,
है शिक्षा सबका अधिकार..

होली आई

रचनाकार- सरमिला बाई (कक्षा 5)

फागुन तिहार.

रचनाकार- धारिणी सोरी

होली का त्योहार पूरे देश में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है. यह त्योहार रंग,उमंग और खुशियों का त्योहार होता है. लोग मन के बैर- भाव को भूलकर प्रेम से गुलाल लगाकर गले मिलते हैं, और एक दूसरे को बधाइयाँ देते हैं. सभी अपने बड़ो से आशीर्वाद लेते हैं.

हर त्योहार मनाने के अपने-अपने रीति-रिवाज ,परंपरा या वैज्ञानिक आधार होते हैं. आज हम अपने छत्तीसगढ़ में होली मनाने की इस रीत के बारे में जानेंगे. बुजुर्गों से पूछने पर पता चला कि हम होली का त्योहार क्यो मनाते हैं? और इसके पीछे क्या कारण है? जबकि हम बचपन से स्कूलों में यह पढ़ते आ रहे है कि होलिका नाम की एक असुर राजकुमारी ने प्रहलाद को अपनी गोद में बैठाकर अग्नि में जलाकर मारने का प्रयत्न किया और स्वयं जलकर भस्म हो गयी.

बुजुर्ग दादा जी ने बताया कि हम हिंदी महीने के अनुसार अपने तीज त्योहारों का आयोजन करते है. चैत्र में नया साल मनाते हैं, और फागुन के साथ ही साल की

समाप्ति हो जाती है. साल का अंतिम माह "फागुन" के आखरी दिन में फागुन का त्योहार मनाया जाता है. इस दिन हम इस साल को "अंतिम विदाई" देते हैं, साथ ही अपने आने वाले नए वर्ष में सुखद जीवन की कामना करते हुए रंग - गुलाल लगाकर फागुन को बिदा करते हैं. फागुन के कुछ दिन पहले से ही लोग फ़ाग गीत गाते हैं, जो कि फागुन के बाद तेरह दिन तक चलता रहता है.

रंग -गुलाल लगाकर इस त्योहार को इसलिए मनाते हैं क्योंकि जब भी किसी को अंतिम विदाई देते हैं तो गुलाल लगाकर उसके प्रति अपना स्नेह, प्रेमभाव प्रकट करते हैं, चाहे वह मृत व्यक्ति हो, कार्यमुक्त या सेवानिवृत्त व्यक्ति हो उनके साथ व्यतीत किए मीठी यादों को संजोकर रखते हैं, बुरे समय को भूलते हैं. ठीक उसी प्रकार फागुन महीने के अंतिम दिन लोग एक दूसरे को रंग लगाकर अपना स्नेह प्रकट करते हैं. आने वाला समय अच्छा हो यह आशीर्वाद देते हैं,और इसलिए छत्तीसगढ़ में लोग इसे "फागुन तिहार" के नाम से जानते हैं.

हमारे छत्तीसगढ़ में यह त्योहार एक तरीके से "काठी" अर्थात छुआ(मृतक कार्य) की तरह मनाया जाता है जिसमे फागुन के एक दिन पूर्व होलिका दहन(दाह) किया जाता है, जो कि हमारे अंदर निहित बुराइयों के दहन का प्रतीक होता है. अगले दिन रंग -गुलाल लगाया जाता है, और तेरह दिन बाद(तेरहवीं) "धुर तिहार" होता है, उस दिन पूरे घर की फिर से लिपाई करके साफ करते है और पुनः रंग खेलते हैं. फ़ाग गीत गाते हैं. इस तरह हमारे छत्तीसगढ़ में फागुन का त्योहार हर्षोल्लास और प्रेम भाव से मनाया जाता है.

पानी

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

बच्चो इक कहानी सुनो,
अच्छी मस्त सुहानी सुनो,

एक तरल द्रव्य पानी है,
सबकी यह जिन्दगानी है.

रंग गंध भले स्वाद नहीं,
बिन पानी कोई आबाद नहीं

कुआँ - बोरिंग , नदी - सरोवर ,
झील - झरना , स्रोत - समंदर

व्यर्थ नहीं बहाना इसे,
हर हाल में बचाना इसे.

चल रे नोनी स्कूल जाबो

रचनाकार- ऋषि प्रधान

चल रे नोनी स्कूल जाबो,
पढबो लिखबो नाम कमाबो.
तोर गियान के सागर भरबो,
चल रे नोनी स्कूल जाबो.....

कछु बन के जिनगानी मा,
दाई ददा के दुख ला हरबो.
सबो गोती उजियारा फैलाबो
अज्ञानता ला दूर भगाबो.
चल रे नोनी स्कूल जाबो.....

हमरो होही नाम जगत में,
अइसे बुता काम ला करबो,

पढ़ लिख के अपन निज के
अउ देस के रोशन नाम ला करबो.
चल रे नोनी स्कूल जाबो....

फुलवारी

रचनाकार- पूर्णेश डड़सेना

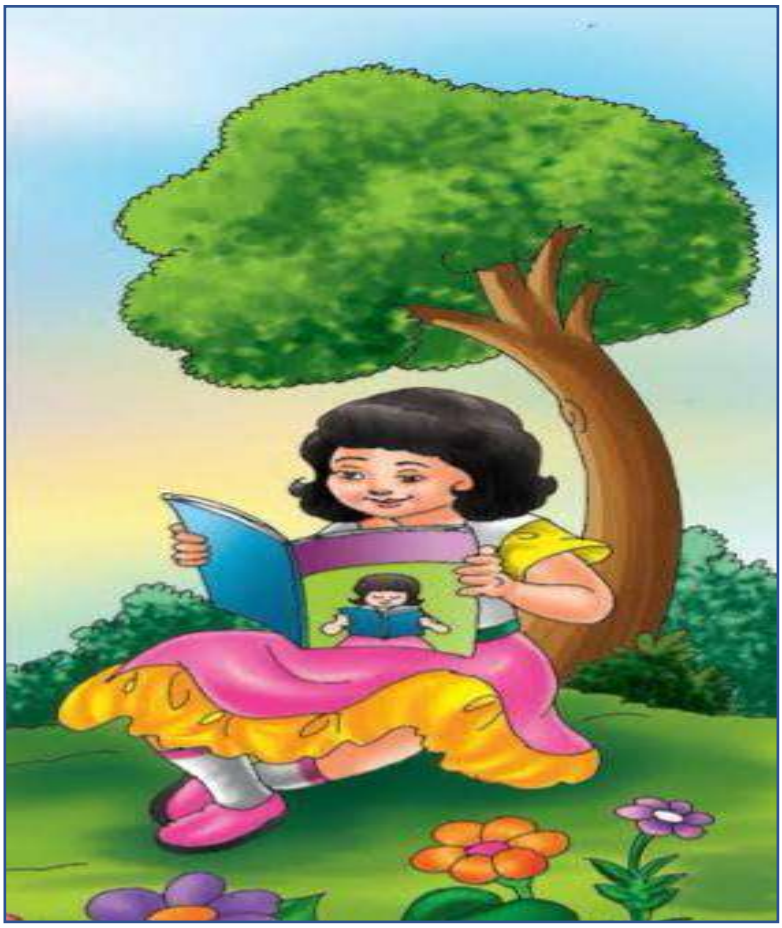

हर वर्ष मेरी फुलवारी में,
कुछ नये फूल आते हैं.
आधे लिपे -पुते चेहरों में,
वह मुझको बहुत भातें हैं.
कैसे उनको ताज़ा रखूं,
हर जतन किया करती हूँ.
नई मिट्टी, नई खाद से,
नित उन पौधों को सिंचा करती हूँ.
कुछ रंगीन ,कुछ बेरंग चेहरों में,
मैं वह ख्वाब खोजा करती हूँ.

नित नये -नये उपायों से उन बच्चों में,
मैं आत्मविश्वास जगाया करती हूँ.
शायद बसंत तक सब खिल जाए,
इस उम्मीद से उन पौधों को सहलाती हूँ.
खिले- खिले फूलों से अब,
नित नये पुष्प हार बनाती हूँ.
आधे लिपे- पुते चेहरों के आगे
अब सब कुछ भूल जाती हूँ.
शिक्षा रूपी इंद्रधनुष से
मैं अपनी बगिया को सजाती हूँ.
खिले-खिले चेहरों के आगे,
अब सब कुछ भूल जाती हूँ.
शिक्षक हूँ खामोशी में भी गुनगुनाती हूँ.

चलो पुस्तक पढ़ें

रचनाकार- योगेश ध्रुव "भीम"

सोनू, मोनू, सीता, गीता
नाचे झूमे मिलकर हँस कर,
आओ सब मिलकर गाना गाये,
गीत, कविता, कहानी, पढ़कर,
चलो चले पुस्तक पढ़े मिलकर..

किस्सा बताती गुड्डे- गुड़ियों की,
परियो की वह बात बताती,
कहते दादा-दादी,नाना-नानी,
बात पुरानी ये पुस्तक कहती,
चलो चले पुस्तक पढ़े मिलकर.

नदी, झरने, वन, पहाड़, पर्वत,
ताल, तलैय्या, पोखर मिलकर,
मछली रानी गीत हमें सुनाती,
सोनू, मोनू खिलकर हँसकर,
चलो चले पुस्तक पढ़े मिलकर.

तितली रानी ये कोयल गाती,
भौरा गुनगुन कहानी सुनाती,
फूलों पर तो हरदम मंडराती,
मधुमक्खी की शहद सुहाती,
चलो चले पुस्तक पढ़े मिलकर.

ज्ञान -विज्ञान की आँखों देखी,
आँख मिचौली कर चाँद तारे,
अंतरिक्ष की सुंदर बाते कहती,
अंको की गणना गणित करती,
चलो चले पुस्तक पढ़े मिलकर.

सैर कराती देश - परदेश की,
गाँव शहर की ओ बाते कहती,
मामा -मामी हमे ये सब बताते,
सुंदर -सुंदर गीत ये गाते,
चलो चले पुस्तक पढ़े मिलकर.

सोनू, मोनू,आओ सीता, गीता, रीता,
दोस्त हमारा सब ये पुस्तक प्यारा,
पुस्तक कहती हर बात रीत पुरानी,

ज्ञान सदा देती हर नए बच्चों को,
चलो चले पुस्तक पढ़े सब मिलकर..

<u>कापी -पेन</u>

रचनाकार- योगेश्वरी साहू

आपने कभी सोचा,
एक शिक्षक क्या चाहता है.
क्या हम पढ़ाना नहीं चाहते,
क्या हम सीखाना नहीं चाहते.
क्या हम उन नन्हों को काबिल,
इंसान बनाना नहीं चाहते.
मैं उन्हें काबिल बनाना चाहती हूँ,
मैं उन्हें डॉक्टर, इंजीनियर,
वैज्ञानिक बनाना चाहती हूँ.
उनमे छुपी बातो को जगाना चाहती हूँ,
उनमे जिज्ञासा जगाना चाहती हूँ
हर शिक्षक चाहता है,
उसका छात्र होनहार बने.
सब अपने डाल को,

मजबूत बनाना चाहते हैं,
उसमें ज्ञान का भंडार भरना चाहते हैं.
आने को तो हर बच्चा स्कूल आता है.
पर क्या कोई देखता है,
वो अपने साथ क्या लाता हैं.
कहीं कापी है, पेन नहीं,
कहीं पेंसिल है, स्लेट नहीं,
और कहीं कुछ भी नहीं.
पूरी कक्षा में 2-4 ही सब कुछ लाते हैं.
इन अभावो के बावजूद,
शिक्षक ही दोषी कहलाते हैं.
आप में हैं सामर्थ्य ,
तो बस इतना कीजिये.
अपने आसपास किसी जरूरतमंद को कॉपी पेन दीजिए.
किसी की प्रतिभा को उभारिये,
किसी की किस्मत संवारिये.
कुछ अभावो में पढ़ नहीं पाते,
जीवन में आगे बढ़ नहीं पाते.
सामर्थ्य है तो इतना कीजिये.
किसी सरकारी स्कूल में जाकर,
कापी पेन दान कीजिये.
ना मैं सोना, ना चाँदी माँगती हूँ,
एक शिक्षिका हूँ केवल,
कापी और पेन माँगती हूँ.

The Milk

Poet-Tikeshwar Sinha " Gabdiwala"

You will find the simplicity.
You will know the liquidity.

You will look the whiteness.
You will taste the sweetness.

You will take the care of your health.
You will gain too much wealth.

You will attain all these .
In the Milk, but how .

Listen me please
Keep at your home, a cow.

प्यारा बचपन

रचनाकार-रेनू कुमारी (कक्षा 5)

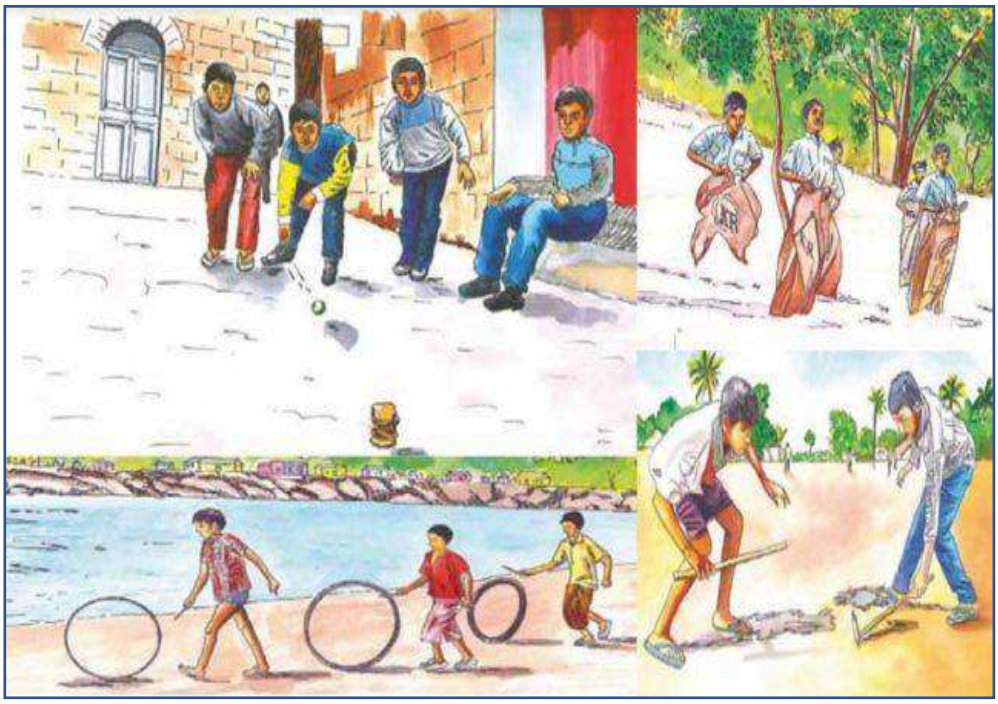

छोटे-छोटे बच्चे हैं हम,
इतनी है हम सबकी चाह.
खेलें, खाएं,मौज मनाएं
और नहीं कोई परवाह..
रोने और मचल जाने से,
हो जाते मनचाहे काम.
प्यारे -प्यारे मम्मी-पापा,
लाकर देते चीज़ तमाम..
जात-पात का ज्ञान किसे है?
छुआछूत की बात नहीं.
सब की सबसे मधुर मित्रता,
सबसे सुंदर साथ यही..
देख शरारत मैया मेरी,

मन ही मन मुस्काती है.
हर्षित होकर उठा गोद में,
हँसकर गले लगाती है..
मैंने माँगा चाँद एक दिन,
माँ लाई पानी की थाल.
परछाई दिखला कर बोली-
ले लो यह चंदा है लाल..
होता सदा हटीला बचपन,
बात- बात में बदले रंग.
चिंता रहित, मस्त यह जीवन,
बचपन में अतुलित आनंद..

आज का श्रवण कुमार

रचनाकार- नीरज त्यागी

पापा मैं ये बीस कंबल पुल के नीचे सो रहे गरीब लोगो को बाँट कर आता हूँ. इस बार बहुत सर्दी पड़ रही है. श्रवण अपने पिता से ये कहकर घर से निकल गया.

इस बार की सर्दी हर साल से वाकई कुछ ज्यादा ही थी. श्रवण उन कंबलों को लेकर पुल के नीचे सो रहे लोगो के पास पहुँचा. वहाँ सभी लोगों को उसने अपने हाथों से कम्बल ओढ़ा दिया.

हर साल की तरह इस बार भी एक आदर्श व्यक्ति की तरह कम्बल बाँटकर वह अपने घर वापस आया और बिना अपने पिता की और ध्यान दिये अपने कमरे में घुस गया. श्रवण के पिता 70 साल के एक बुजुर्ग व्यक्ति हैं और अपने शरीर के दर्द के कारण उन्हें चलने फिरने में बहुत दर्द होता है. बेटे के वापस आने के बाद पिता ने उसे अपने पास बुलाया.

किन्तु रोज की तरह श्रवण अपने पिता को बोला-"आप बस बिस्तर पर पड़े पड़े कुछ -ना- कुछ काम बताते ही रहते हैं, परेशान कर रखा है". और अपने कमरे में चला गया.

रोज की तरह अपने पैर के दर्द से परेशान श्रवण के पिता ने जैसे तैसे दूसरे कमरे से अपने लिए कम्बल लिया और रोज की तरह ही नम आँखों के साथ अपने दुखों को कम्बल में ढक कर सो गए.

कहानी का सार :- आजकल लोगों की मनोस्थिति कुछ ऐसी हो गयी है कि वो बहुत से काम तो लोगों की देखा देखी ही करने लगे हैं. अपने आप को अत्यधिक सामाजिक दिखाने की जिज्ञासा की होड़ में दिन - रात लगे रहना और अपने ही घर में बात-बात पर अपने बड़े बुजुर्गों को अपमानित करना एक आम बात हो गयी है. आजकल गरीब लोगों की सहायता करना लोगों के लिये एक दिखावे का सामान हो गया है. थोड़ी बहुत सहायता करने के उपरांत उसका अत्यधिक बखान करना एक आम बात है. बच्चों भूलकर आप कभी ऐसे मत बनना. एक नेक, समझदार और संवेदनशील इंसान बनना.

पानी है अमृत

रचनाकार- डागेश्वर प्रसाद साहू

पानी है अमृत, पानी से है जीवन.
पानी, पानी नहीं जीवन का है सार.
पानी से पेड़ -पौधे, पानी से है जीव संसार.
पानी से बदरा, बदरा से है बरसात.
पानी से नदिया,पानी से है सागर की लहर
पानी का करो संरक्षण , और सही उपभोग
पानी नहीं तो कुछ नहीं,ये लोगो को है ज्ञान
पर लोगो को नहीं फिक्र, नहीं करते संरक्षण का उपाय
पानी, पानी नहीं जीवन का है सार

हुनर

रचनाकार-भूमिका राय

अपने हुनर को
जिसने भी निखार लिया है

उसको इस दुनिया ने
भरपूर मान सम्मान दिया है

किसी का है खेल उत्तम
उत्तम है किसी की कलाकारी

हर किसी में छुपी एक कला
खोजने और निखारने की करें तैयारी

<u>बिटकुला के चर्चे</u>

रचनाकार- मनोज कुमार पाटनवार

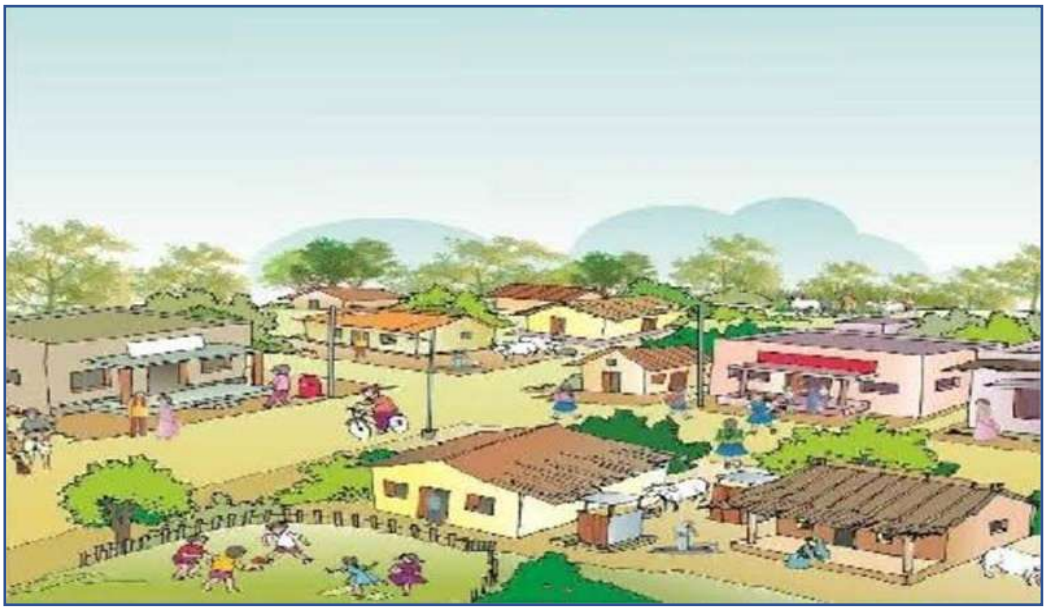

1. आज मेरे गाँव के चर्चे गलियारे से निकलकर शहरों तक होने लगे हैं: -
विद्वान और हुनरमंद लोग यहाँ रहने लगे हैं!
क्योंकि लोग हर क्षेत्र में यहाँ आगे बढ़ने लगे हैं !!

2. आज मेरे गाँव के चर्चे गलियारे से निकलकर शहरों तक होने लगे हैं :-
गाँव की हर छोटी-बड़ी खबर, अखबारों में छपने लगे हैं!
क्योंकि लोग यहाँ के लेखक और कवि बनने लगे हैं !!

3. आज मेरे गाँव के चर्चे गलियारे से निकलकर शहरों तक होने लगे हैं :-
यहाँ के लोग विकास की चरम सीमा छूने लगे हैं !
क्योंकि शिक्षक, पुलिस या हो सेना सबसे ज्यादा यहीं से लोग नौकरी करने लगे हैं !!

4. आज मेरे गाँव के चर्चे गलियारे से निकलकर शहरों तक होने लगे हैं :-

शहरों से आकर बच्चे मेरे गाँव में पढ़ने लगे हैं !
क्योंकि शिक्षक यहां निशुल्क कोचिंग देने लगे हैं !!

5. आज मेरे गाँव के चर्चे गलियारे से निकलकर शहरों तक होने लगे हैं :-
यहाँ के विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धा बढ़ने लगे हैं !
क्योंकि बोर्ड परीक्षा में टॉपर यहीं से पैदा होने लगे हैं !!

6. आज मेरे गाँव के चर्चे गलियारे से निकलकर शहरों तक होने लगे हैं :-
शादी के बाद भी यहाँ की बहुएँ, नियमित पढ़ाई करने लगे हैं !
क्योंकि यहाँ के लोग ,बहुओं को भी बेटी मानने लगे हैं !!

7. आज मेरे गाँव के चर्चे गलियारे से निकलकर शहरों तक होने लगे हैं :-
युवाओं में खेल के प्रति उत्साह बढ़ने लगे हैं !
क्योंकि क्रिकेट में आसपास के गाँव से, सबसे ज्यादा शील्ड और मेडल यहाँ के युवा लाने लगे हैं *!!

8. आज मेरे गाँव के चर्चे गलियारे से निकलकर शहरों तक होने लगे हैं :-
यहाँ सबसे ज्यादा धार्मिक आयोजन होने लगे हैं !
क्योंकि यहाँ के लोगों का, ईशवर के प्रति आस्था बढ़ने लगे हैं !!

9. आज मेरे गाँव के चर्चे गलियारे से निकलकर शहरों तक होने लगे हैं :-
यहाँ की युवा पीढ़ी नशा से दूर रहने लगे हैं !
क्योंकि यहाँ शिक्षा, संस्कार और सत्संग बसने लगे हैं!!

10. आज मेरे गाँव के चर्चे गलियारे से निकलकर शहरों तक होने लगे हैं :-
यहाँ छोटे -बड़े कार्यक्रमों का, सफल आयोजन होने लगे हैं !
क्योंकि मेरे गाँव के सभी वर्गों के लोग संगठित होकर रहने लगे हैं !!

ऊंची उड़ान

रचनाकार- डॉ शिप्रा बेग

शिक्षा का है अधिकार,
हर बालिका का मान.
अशिक्षित रखना इन्हें,
है समाज का अपमान.
अवसर देना है उसको,
भरेगी तब ऊंची उड़ान.
हौसला है उसमे भरना,
जो जगायेगा स्वाभिमान.
रौशन है बेटी से आज,
घर,समाज,देश का अभिमान..

स्कूल बंद हैं, आप क्या कर रहे हैं ?

रचनाकार- डॉ एम सुधीश

कोरोना की वजह से हम सबको बहुत सावधानी बरतनी है. यह बीमारी बहुत ही अधिक खतरनाक है.| इसलिए स्कूल बंद कर दिए गए हैं. ऐसे में आप अपना समय कैसे बिता रहे हैं? आप चाहें तो ए सब कर अपना समय का बेहतर इस्तेमाल कर सकते हैं-

- अपने अभ्यास पुस्तिकाओं को पूरा कर उसे अच्छे से समझें
- पाठ्यपुस्तकों को पूरा करें, उन्हें अच्छे से पढ़ें
- कहानी की पुस्तकें लाकर पढ़ें, समाचार पत्रों के साथ मिलने वाला बच्चों का अंक लाकर पढ़ें
- रेडियो और टीवी में भी बहुत से शैक्षिक कार्यक्रम आते हैं, उन्हें देखें
- पुस्तक में क्यू-आर कोड देखने के लिए घर के मोबाइल में दीक्षा एप्प डाउनलोड कर विभिन्न विषयों को समझ सकते हैं
- मोबाइल में गूगल बोलो एप्प डाउनलोड कर बहुत सी कहानियाँ आप पढ़ सकते हो

- बच्चों की पत्रिकाएँ जैसे चंपक, लोटपोट, अमर चित्र कथा सभी अब निःशुल्क डाउनलोड की जा सकती है. इसका लाभ उठाएं

पर ध्यान रखें बहुत सारे लोग एक साथ नहीं बैठें और एक दूसरे से दूरी बनाकर रखें.

गौरी की होली

रचनाकार- प्रिया देवांगन प्रियू

एक छोटी सी लड़की थी, उसका नाम था गौरी. गौरी बहुत ही सीधी साधी लड़की थी. वह किसी से ज्यादा बात नहीं करती थी. स्कूल में भी वह अपने पढ़ाई - लिखाई से ही मतलब रखती थी. स्कूल में सभी बच्चे मैदान में खेलते थे, लेकिन वह चुपचाप कक्षा में बैठी रहती थी. वह सहमी रहती थी. क्लास के बच्चे उससे बात करते थे, तभी वह बात करती थी. उसकी कोई सहेली भी नहीं थी. छुट्टी में बच्चे खेलने के लिये उसको बुलाते थे तो वह जाने से मना कर देती थी. फिर बच्चे भी उसको बुलाना बन्द कर दिये. गौरी अकेले रहना पसंद करती थी.

अचानक गौरी बीमार पड़ गयी. उसके माता - पिता गौरी को अस्पताल ले कर गए. डॉक्टर ने गौरी से पूछा - आपके स्कूल में कितनी सहेलियां है, गौरी चुपचाप थी. फिर उसके माता-पिता बताये, गौरी किसी के साथ खेलती नहीं है, वह अकेली रहती है।.डॉक्टर ने सलाह दिया कि -गौरी अगर तुम दुसरे बच्चो के साथ खेलोगी तो जल्दी ही ठीक हो जाओगी. तुम्हारा अकेले रहना ही तुम्हारी बीमारी का कारण है.

दो दिन बाद होली का त्यौहार था. सभी बच्चे मोहल्ले में होली खेल रहे थे. गौरी खिड़की से बच्चों को होली खेलते, पिचकारी चलाते देख रही थी तो उसका भी मन हुआ कि मैं भी होली खेलूंगी. लेकिन गौरी को किसी से कहने की हिम्मत नहीं हुई. और वह चुपचाप देखती रही.

बच्चे होली खेलते - खेलते खिड़की के पास आये फिर गौरी से कहने लगे कि आओ गौरी तुम भी हम लोगों के साथ होली खेलो बहुत मजा आएगा. अब से तुम हमारे साथ रहना. ऐसे कहकर गौरी के चेहरे में रंग - गुलाल लगाए. गौरी भी खुश हो कर सबके चेहरे में रंग लगाई. और उस दिन से गौरी सब बच्चों के साथ मिल-जुल कर रहने लगी. ये होली उसकी यादगार होली बन गयी.

<u>औरत की पहचान</u>

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे

औरत की पहचान,
अब घर तक सीमित नहीं.
लांघ गई अब पर.
औरत अब घर तक सीमित नहीं
अब औरत की पहचान बस
यही तक सिमटी नहीं है
वह देहरी के उस पार भी,
और सरहद के उस पार भी,
बना गई पहचान.

अब केवल घर ही नहीं संभालती
संभालती है एक संस्था.
संभालती है स्कूल और कॉलेज.
और संवारती है अंतरिक्ष,

घर ही नहीं संवारती, संवारती है
अपना और आने वाली, पीढ़ी का कल भी.
ख्याल सिर्फ अपनों का ही नहीं करती,
करती है, रक्षा और देश की सुरक्षा.
औरत की पहचान
अब घर तक सीमित नहीं
लांध गई अब पर
औरत की पहचान अब
हर कण-कण में छा गई.

चहा

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

मीठ-मीठ लगै चहा.
चुट-चुट जरै चहा..

बिहनिया ले घरोघर,
चूल्हा में डबकै चहा.

पानी गुर - चीनी पत्ती,
गंजी म बनै चहा.

दूध घलो डराथै येमा,
कोरा करिया दिखै चहा.

लइका सियान सब झन,
सुपुर-सुपुर झींकै चहा.

मेरी हो पहचान

रचनाकार- संतोष कुमार पटेल

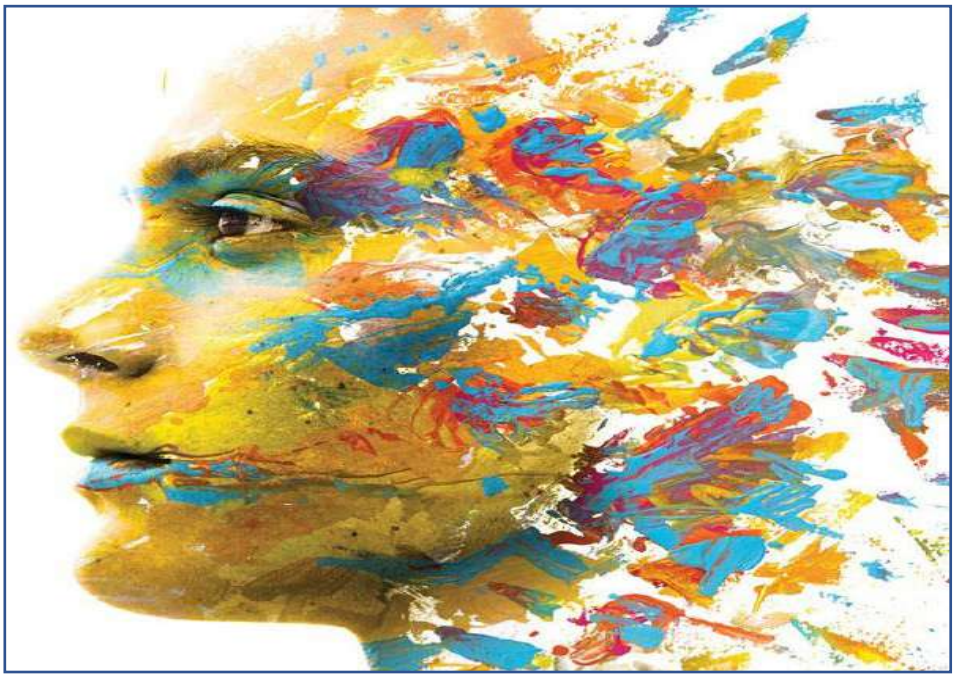

खूब पढ़-लिखकर,
करूँ मैं ऐसा काम.
लोग मुझे जाने,
ऐसी हो मेरी पहचान..
बड़ों का आदर करूँ,
गुरुओं का करूँ सम्मान.
लोग मुझे जाने,
ऐसी हो मेरी पहचान..
दुर्व्यसनों से दूर रहूँ,
सादा हो मेरा खानपान.
लोग मुझे जाने,
ऐसी हो मेरी पहचान..
सत्य-न्याय के राह पर चलूँ,
कभी न करूँ बुरा काम.

लोग मुझे जाने ,
ऐसी हो मेरी पहचान..
अच्छा नागरिक बनकर,
बढ़ाऊँ अपनी देश की शान.
लोग मुझे जाने,
ऐसी हो मेरी पहचान.

तीन मछलियों की कहानी

रचनाकार-संतोष कुमार कौशिक

आओ बच्चो, तुम्हें आज एक कहानी सुनाता हूं.
तीन मछलियों की है कहानी, उसे मैं बताता हूं..
गांव के पास तालाब में तीन मछलियां रहती थीं.
चारे की तलाश में चारों ओर तालाब में घूमती थीं..

कुछ बच्चे तालाब में जाल डालने की बात कर रहे थे.
जिसे तीनों मछलियां कान लगाकर सुन रही थीं..
छोटी मछली कहती है, कल तालाब में जाल डलने वाला है.
बचने की योजना बना लो नहीं तो सभी मारे जाने वाले हैं..

मैं तो सोची हूं, रात में ही दूसरे तालाब में चली जाऊंगी
वहां जाकर चैन से अपना जीवन बिताऊंगी..

दूसरी मछली कहती है, मैं भी कुछ उपाय सोचूंगी.
जैसे ही जाल पास आएगा, मैं कीचड़ में घुस जाऊंगी

तीसरी बड़ी मछली हंसकर कहती है,
डरपोक हो तुम, मैं ऐसे नहीं डरूंगी.
अपनी बुद्धि का प्रयोग करूंगी,
जाल कैसा भी हो जाल में नहीं फसूंगी

सुबह हुई मछुवारा अपना जाल लेकर आया
पूरे तालाब में मछली मारने जाल फैलाया.
छोटी मछली रात में ही दूसरे तालाब में चली गई थी
दूसरी मछली जाल देखकर कीचड़ में घुस चुकी थी.

तीसरी मछली जाल से निकलने चारों तरफ भागती रही.
बचने की कोई राह न थी,वो जाल में फंस चुकी थी..
जाल में फंसी मछली, अपनी मूर्खता पर रो रही थी.
बिना योजना के काम किया,इसलिए पछता रही हूं..

CARTOON

Poet-TANUSHREE DADSENA(CLASS-9th)

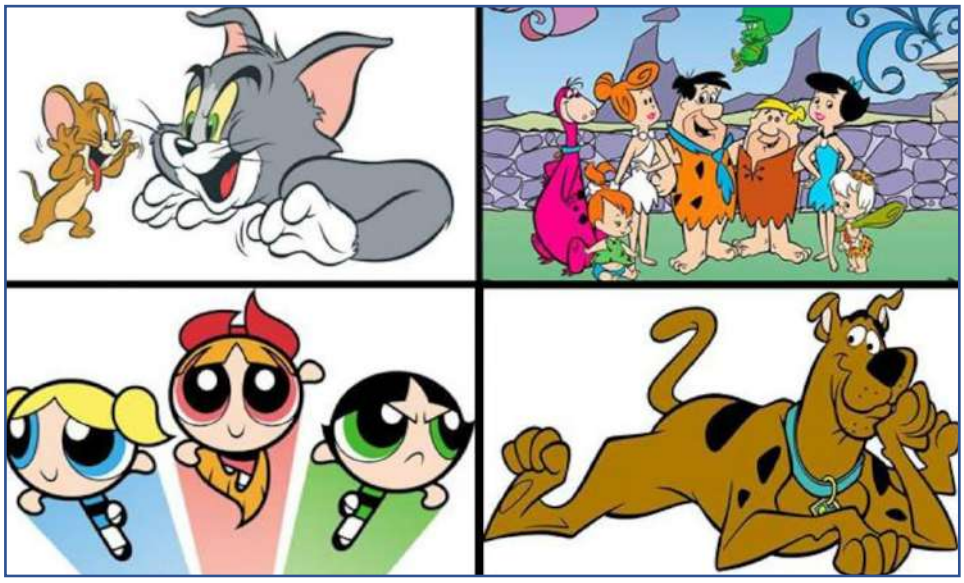

The best cartoon,
Seen in afternoon.
Either shin Chan or Pokémon.
Everyone is fond of Dore mon.
Someone is Motu.
So someone is Patlu.
Mitsi likes Discount.
Eager to climb the Mount.
Scooby-Doo of Donald Duck.
Concentrated on his luck.
Minee and Mickey mouse.
Every child give a big applause
Mouse of Tom and Jerry.
Eats the best cherry.
Fond of Harry Potter.
Kept the CD in Locker.
The Powerpuff girls.
Having all the powers in the world.
Cartoon, Cartoon, Cartoon.
Seen in the afternoon.
Either Me or You.
Both have seen the Scooby-Doo

मेरे स्कूल की सरकार स्कूल चलाती है

रचनाकार- लुकेश्वर सिंह

स्कूल के सारे नियम और कानून बनाती है,
और उन नियमों का प्यार से पालन कराती है,
मेरे स्कूल की सरकार स्कूल चलाती है.

सभी बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित कराती है,
नैतिकता का पाठ पढ़ाती है,
मेरे स्कूल की सरकार स्कूल चलाती है.

स्कूल के हित में योजनाएं बनाती है,
नेतृत्व क्षमता की भावना जगाती है,
मेरे स्कूल की सरकार स्कूल चलाती है.

परिस्थितियों के अनुसार फैसले कराती है,
सभी को भाईचारे का पाठ पढ़ाती है,

मेरे स्कूल की सरकार स्कूल चलाती है.

स्कूल की समस्याएं बाल कैबिनेट में उठाती है,
और मंत्रिपरिषद से निराकरण कराती है,
मेरे स्कूल की सरकार स्कूल चलाती है.

सभी की गलतियां माफ कराती है,
सभी को सही न्याय दिलाती है,
मेरे स्कूल की सरकार स्कूल चलाती है.

नई -नई जिम्मेदारियां और नये- नये अवसर दिलाती है,
कैसे जिये विद्यार्थी जीवन, सबको जीना सिखाती है,
मेरे स्कूल की सरकार स्कूल चलाती है.

इको क्लब हमारी, हमारा पर्यावरण बचाती है,
ना करो इसे प्रदूषित यह बात सबको बताती है,
मेरे स्कूल की सरकार स्कूल चलाती है.

सिंगल यूज प्लास्टिक पर रोक लगाती है,
प्लास्टिक को करें रिसाइकल सभी को सिखाती है,
मेरे स्कूल की सरकार स्कूल चलाती है.

कचरे को कूड़ेदान में ही डालें ,सभी को बताती है,
गीला- सूखा कचरा अलग -अलग कराती है
मेरे स्कूल की सरकार स्कूल चलाती ह.

। शिक्षकों के कामों में हाथ बटाती है,
इस तरह अपना उत्तर दायित्व निभाती है,
मेरे स्कूल की सरकार स्कूल चलाती है.

पुस्तकालय की किताबें वितरित कराती है,
रीडिंग कैंपेन का आयोजन कराती है,
मेरे स्कूल की सरकार स्कूल चलाती है.

स्कूल में पोषणयुक्त सोया दूध का वितरण कराती है,
सभी को ताकतवर बनाती है,
मेरे स्कूल की सरकार स्कूल चलाती है.

स्कूल में खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन कराती है,
सभी बच्चों में टीम भावना जगाती है,
मेरे स्कूल की सरकार स्कूल चलाती है.

सभी को गणवेश दिलाती है,
मध्यान्ह भोजन का उचित संचालन कराती है,
मेरे स्कूल की सरकार स्कूल चलाती है.

विद्यालय में सुंदर पौधे लगवाती है,
सिंचाई और सुरक्षा की व्यवस्था कराती है,
मेरे स्कूल की सरकार स्कूल चलाती है.

पढ़ाई- लिखाई के लिए अवसर बढ़ाती है,
पीने का स्वच्छ पानी पिलाकर ,ऊर्जावान बनाती है,

मेरे स्कूल की सरकार स्कूल चलाती है.

सुबह की प्रार्थना सभा का संचालन कराती है,
स्कूल व शौचालय की सफाई कराती है,
मेरे स्कूल की सरकार स्कूल चलाती है.

राष्ट्रीय पर्वों पर कार्यक्रम सिखाती है,
देशभक्ति की भावना जगाती है,
मेरे स्कूल की सरकार स्कूल चलाती है.

जीवन कौशल शिक्षा - बालिकाओं ने सीखी समानुभूति

रचनाकार- श्रीमती तरुण कुलदीप

ये कहानी है कक्षा 7वीं में अध्ययनरत बालिका सनोती कुमेटी की. सनोती ग्राम भरंडा. जिला. नारायणपुर की निवासी है. सनोती के परिवार में माता, पिता एवं 2 छोटे भाई, बहन हैं. घर की आर्थिक स्थिति कमजोर है. पिता कृषि कार्य करके परिवार का भरण पोषण करते हैं. बचपन में एक दुर्घटना के दौरान सनोती के पैर आग में जल गए जिसकी वजह से वह केवल एक पैर से लंगड़ाते हुए चलती है. सनोती ने गाँव के प्रायमरी स्कूल से 5वीं तक की पढाई पूरी की. शारीरिक रूप से अक्षम होने के कारण वह नियमित रूप से स्कूल नहीं जा पाती थी जिसकी वजह से वह पढाई में कमजोर है.

सनोती ने इस वर्ष कक्षा सातवी में हमारे विद्यालय- कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय सुलेंगा, जिला नारायणपुर में प्रवेश लिया. शारीरिक अक्षमता और पढाई में कमजोर होने की वजह से सनोती स्वयं को अन्य बालिकाओं से अलग महसूस करती थी. वह उन्हें देखकर दुखी होते है कि वह उनकी तरह क्यों खेल नहीं पाती और अपने दैनिक कार्य नहीं कर पाती. अन्य बालिकाओं में से केवल कुछ ही बालिकाएं उससे बात करती व उसकी मदद करती थी. बालिकाओं

में सनोती के लिए समानुभूति का एहसास दिलाने व हमदर्दी का महत्व समझाने के लिए जीवन कौशल सत्र में समानुभूति यानि हमदर्दी और दोस्ती का सत्र लिया.

सत्र के दौरान मैंने अन्य बालिकाओं को एक पैर पर खड़े होने और चलने के लिए कहा. लेकिन बालिकाएं ऐसा करने में असमर्थ थीं. इससे बालिकाओं को एहसास हुआ की सनोति को अपने रोजमर्रा के काम करने में कितनी कठिनाई महसूस होती होगी. साथ ही सनोति को अन्य बालिकाओं को यह गतिविधि करते हुए देखना मजेदार रहा. उसे लगा कि वे सब कोशिश तो कर रही हैं लेकिन कोई भी सफलता पूर्वक नहीं कर पा रही हैं. इससे उसमे आत्मविश्वास आया कि वह स्वयं के कार्य करने में अक्षम नहीं बल्कि पूरी तरह से सक्षम है.

इस सत्र के बाद से सभी बालिकाओं ने समानुभूति और हमदर्दी को बेहतर तरीके से समझा और अब वे सभी अब ना केवल सनोति की मदद करते हैं बल्कि दैनिक जीवन में भी समानुभूति और हमदर्दी का अभ्यास भी कर रही हैं. जिससे हमारे स्कूल का माहौल पहले की अपेक्षा काफी दोस्ताना हो गया है. यह देखकर हमें बहुत प्रसन्नता होती है. इसका श्रेय पूर्ण रूप से विजयी परियोजना के अंतर्गत दिए जा रहे जीवन कौशल शिक्षा को जाता है.

विंग पायलट अभिनंदन की जय

रचनाकार-डीजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"

विस्फोटक गाड़ी घुस आए,
पुलवामा को बंम से उड़ाए.
भारतीयों को दहशत में लाए,
मेरे ओ लाल ने वीर गति पाए.

बदले की शोला को भड़काए,
सर्जिकल स्ट्राइक कर पाक से आए.
आतंकी ठिकानों को खाक में मिलाए,
अदम शौर्य की साहस दिखलाए.

सीजफायर उलंघ्घन कर गलती दुहराए,
हमारे सैनिकों ने खूब मजा चखाए.
देश सीमा में लड़ाकू विमान घुसाए,
योद्धा अभिनंदन ने उसे मार गिराए.

पैराशूट से उतर कर जान बचाया,
पाक सीमा में जय हिन्द नारा लगाया.
पाक सैनिक देखकर घबराया,
ऐसा वीर मेरा अभिनंदन भाया.

कोरोना कोरोना कोरोना

रचनाकार- पेश्वर राम यादव

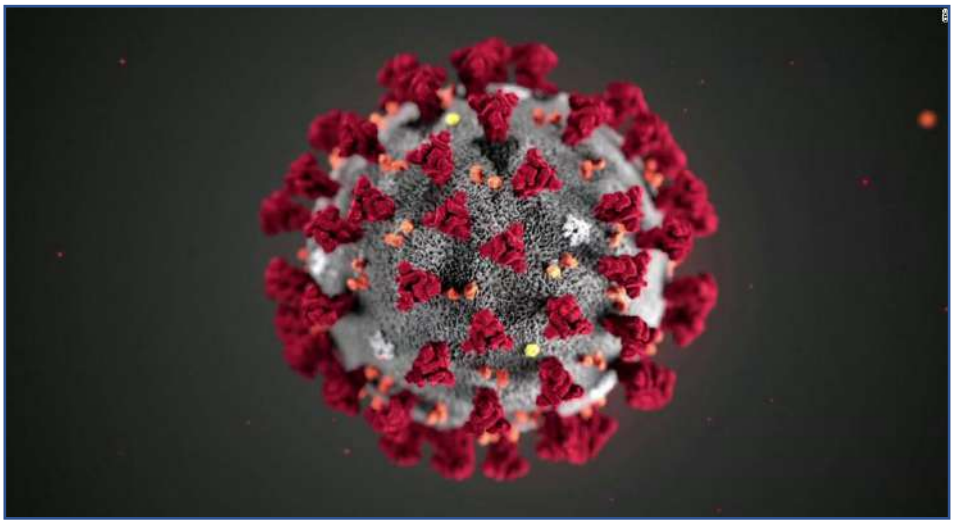

कोरोना कोरोना कोरोना,
भारत में यह न होना.
गर्म पानी ही पीना,
अब न किसी को रोना.

सर्दी, जुकाम, निमोनिया,
थकान, बुखार है यह लक्षण.
अंडा, मछली, मांस,
आइसक्रीम का न हो भक्षण.

इंसान, जानवर न हो मिलन,
खांस छींक से न हाथ मिलन.
जानकारी, सावधानी से करो जतन,
कोरोना का भारत से करो पतन.

हमर नंदावत खेल

रचनाकार- महेन्द्र देवांगन माटी

जबले आहे किरकेट ह, गुल्ली-डंडा नंदागे.
लइकापन के बांटी -भंउरा, जाने कहां गंवागे..
पाराभर के लइकामन ह, हटरी म सकलाये.
खेलन छूछुव उला संगी, अब्बड़ मजा आये..
बेंदरा सही पेड़ में कूदन, खेलन डंडापचरंगा.
पटकीक-पटका कुसती खेलन, कोनों राहे बजरंगा..
तुकतुक के बांटी खेलन, अऊ चलावन भंऊरा.
रेसटीप अऊ नदी पहाड़ ल, खेलन चंऊरा-चंऊरा..
बदल गे जमाना संगी, जम्मो खेल नंदागे.
तइहा के बात ल बइहा लेगे, संसकिरती ल भुलागे..
टीवी अऊ मोबाइल में, सबो आदमी भुलाये हे.
सुन्ना परगे खोर-गली, कुरिया में दुनिया समाये हे

नाई की समझदारी

रचनाकार- श्वेता तिवारी

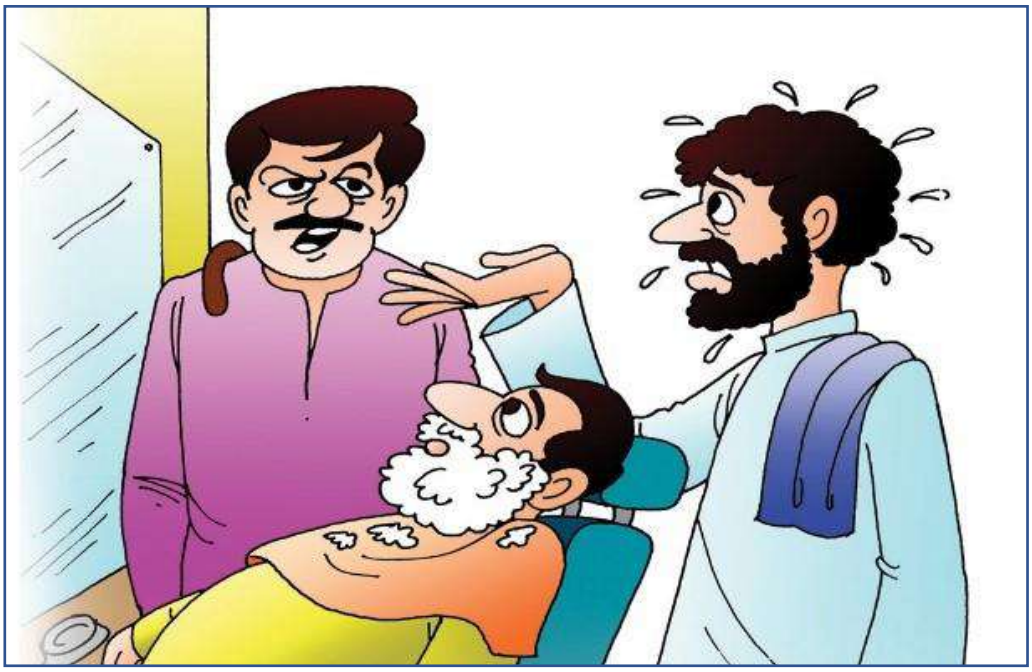

किसी समय एक राज्य में राजा राज्य करते थे. उनके अनेक सैनिक थी. जिस समय राजा को हजामत बनवाने होती थी उस दिन सुबह-सुबह नगर के 8 से 10 नाई अपने औजारों के साथ महल में उपस्थित होते थे. जब राजा हजामत बनवाने आते तब उनके साथ महामंत्री सेनापति और कुछ सैनिक भी रहते. पलटन को देख बेचारे ना इयो को तो वैसे ही पसीना छूटता था क्योंकि थोड़ी गलती हुई नहीं कि कोड़े पड़नी शुरू. राजा भी कम ना थे. ना जाने उन्हें क्या मजा आता कि एक नाई से सामने के बाल तो दूसरे से बाएं के तीसरे से दाएं के बाल कटवाते थे परंतु चौथे से पीछे के बाल कटवाते तो उस बेचारे नाई की शामत आ जाती. एक बार ऐसा हुआ कि नाई नया-नया ही उनके राज्य में आया था. उसे राजा की हजामत के बारे में कुछ भी जानकारी नहीं थी.

संयोग से राजा ने उसे पीछे के बाल काटने को कहा नया नाई बड़ी उलझन में फंस गया उसने बड़ी हिम्मत करके नम्रता के साथ कहा महाराज मुझे आपके सर के पीछे के बाल काटने हैं तो जरा, जरा क्या थोड़ा हुजूर अरे हुजूर क्या थोड़ा

हुजूर सर झुका लीजिए. क्या कहा राजा ने लाल-लाल आंखें दिखाते हुए कहा मेरा सर और उस पर तेरा अधिकार बेवकूफ राजा तू है कि मैं एक तरफ तो तू मुझे महाराजा कहता है और दूसरी तरफ सर झुकाने के लिए भी कहता है. सेनापति इस बदतमीज को 25 कोड़े मारे जाएं 25 कोड़े की मार के डर से नाई भाग खड़ा हुआ. आगे आगे नाई उसके पीछे पीछे राजा. राजा के पीछे महामंत्री महामंत्री के पीछे सैनिक. नगर वासी यह अनोखा नजारा देख हंसने लगे. किसी तरह नाई को पकड़ा गया उसने राजा के बाल बनाएं उसके बाद राजा ने बड़े प्रेम से उसे 25 कोड़े लगाने के लिए एक सैनिक से कहा. 25 कोड़े के मार के बाद वह नाई कराहते हुए जोर जोर से रोने लगा. राजा भी आश्चर्यचकित होकर बोले आज तक कोई भी 25 कोड़े की सजा के बाद तो इतना नहीं रोया जितना तू चिल्ला रहा है. महाराज आपने तो इस सैनिक को हल्के से कोड़े मारने के लिए कहा था लेकिन यह तो जोर-जोर से कोड़े मारकर अपनी जाति दुश्मनी निकाल रहा है. कैसी जाति दुश्मनी महाराज कुछ दिन पहले इसकी बकरी मेरे बाड़ी की सारी सब्जी खा गई थी मैंने उसकी बकरी की पिटाई की और आज उसका बदला इस तरह निकाल रहा है. सेनापति इसे सैनिक विधि के अनुसार जो लोगों को इस तरह से पीटा जाएगा तो कल को मेरे राज्य में कोई भी नहीं रहेगा. महामंत्री नाई को 5 रजत मुद्रा और एक स्वर्ण मुद्रा दे दी जाए. जो आज्ञा महाराज महामंत्री ने कहा महाराज मेरी समझ में नहीं आता कि सजा के साथ ये इनाम कैसा? राजा बोले तू मेरे राज्य में नया नया आया है. तूने अपने राजा का सर झुकाया इसलिए तुझे इसकी सजा तो मिलनी ही चाहिए . यह सजा तो यहां हमेशा दी जाती है. मूर्ख मैं नहीं जानता था कि इतने कोड़े खाने के बाद कुछ दिन तू काम करने योग्य ना रहेगा. मैं तेरा राजा हूं प्रजा पालक हूं. मैं जब सजा दे सकता हूं तो इनाम भी दे सकता हूं. फिर मेरे कारण तेरे बाल बच्चे क्यों भूखे मरे इसलिए आर्थिक सहायता के रूप में तुझे इनाम भी दिया जा रहा है. सैनिक इसे उठाकर राजकीय दवाखाने ले जाओ और इस तरह चतुर नाई को सजा के साथ इनाम भी मिल गया.

Learn from nature

Poet-Santosh Kumar Patel

Cloud is white, Say always right.
Forest is green, Keep everywhere clean.
Sky is blue, put on your shoe.
Sun is red, make your own bed
Soil is brown, ride safe in town.
Rainbow is colourful, don't waste food
We learn a lot from nature
make pleasant our future.

घोंसला

रचनाकार- श्वेता तिवारी

एक गाँव में किसान का परिवार रहता था. उनके आँगन में एक आम का पेड़ था. जिसमें चिड़िया ने अपना घोंसला बनाया था. उसने चार अंडे दिए. चिड़िया और चिड़ा रोज सुबह भोजन की तलाश में निकल जाते और शाम को वापस अपने घोंसले में आ जाते. धीरे-धीरे समय गुजरता गया और अंडों से बच्चे निकल आए. वे दिन भर चीं-चीं करते और घोंसले से घास- फूस नीचे गिराते. किसान की पत्नी कनक रोज झाड़ू लगाती और उन चिड़ियों के बच्चों को भला- बुरा कहती. अपने पति किसान से कहती है, कि इन्हें कहीं दूर कर दीजिए. मुझसे रोज की सफाई नहीं होती और बच्चे भी बहुत शोर करते हैं. चिड़िया और उनके बच्चे उदास हो जाते. चिड़िया फिर अपने बच्चों के लिए भोजन की तलाश में निकल जाती है और शाम को घोंसलें में लौट आती, एक शाम को चिड़ी- चिड़ा अपने घोंसलें में बैठे अपने बच्चों को दाना खिला रहे थे तभी किसान अपनी पत्नी कनक से उदास स्वर में कहता है कि हमारी फसल बर्बाद हो रही है. पत्नी आश्चर्य से पूछती है कैसे जी! किसान कहता है -फसल में इल्लिया लग गई हैं और इसकी संख्या बढ़ती ही जा रही है. मैं उन्हें नियंत्रण नहीं कर पा रहा हूँ. यही चिंता मुझे सता

रही है कि मैं क्या करूं. चिड़िया और चिड़ा दोनों किसान और उसकी पत्नी की बातें सुन रहे थे अगली सुबह चिड़ा अपने बच्चों के साथ खेत में जाकर सारी इल्लियों को मार डालते हैं, नष्ट कर देते हैं और किसान की फसल को बचा लेते हैं. किसान खेत में जाता है तो चिड़िया अपने परिवार के साथ खेत में लगे रहते हैं. इसे देखकर किसान बहुत खुश होता है और अपनी पत्नी को सारी बातें बताता है. कनक को मन ही मन अपने किए गए कार्य पर बहुत ही पछतावा होता है. उसका स्वभाव पहले से बदल जाता है और अब वह चिड़ियों के बच्चों को भला - बुरा नहीं कहती है. अब उन्हें वह प्यार से देखती है और जब बच्चे दाना -तिनका नीचे गिराते तब वह उन्हें झाड़ कर साफ कर देती. वह किसान से कहती है कि अब यह घोंसला कहीं नहीं जाएगा. हमारे आँगन में ही रहेगा

मां की ममता

रचनाकार- तुलसराम चंद्राकर

माँ बड़ी प्यारी होती है,
जग मे सबसे न्यारी होती है
अपार है माँ की ममता,
इसका कोई आकार नहीं होती है.

माँ की ममता करुणा न्यारी,
जैसे दया की चादर .
शक्ति देती नित हम सबको,
बन अमृत का गागर.

ममता का सागर है माँ ,

अम्बर सा माँ का अवतार.
त्याग मूर्ति है प्रकृति सी,
धरती सा माँ का प्यार.

ईश का अवतार तू ही,
तू ही जीवन का आधार.
उपकार तेरा मुझ पर है,
करूँ मै तेरी जय जयकार.

माँ का आंचल खुशियों की फुलवारी ,
माँ की ममता है अपार
माँ के चरणों मे आनंद की किलकारी,
इनसे ही सबका सपना साकार

आइये हमारे प्रेरणास्रोत के बारे में जाने

रचनाकार- प्रीति सिंह

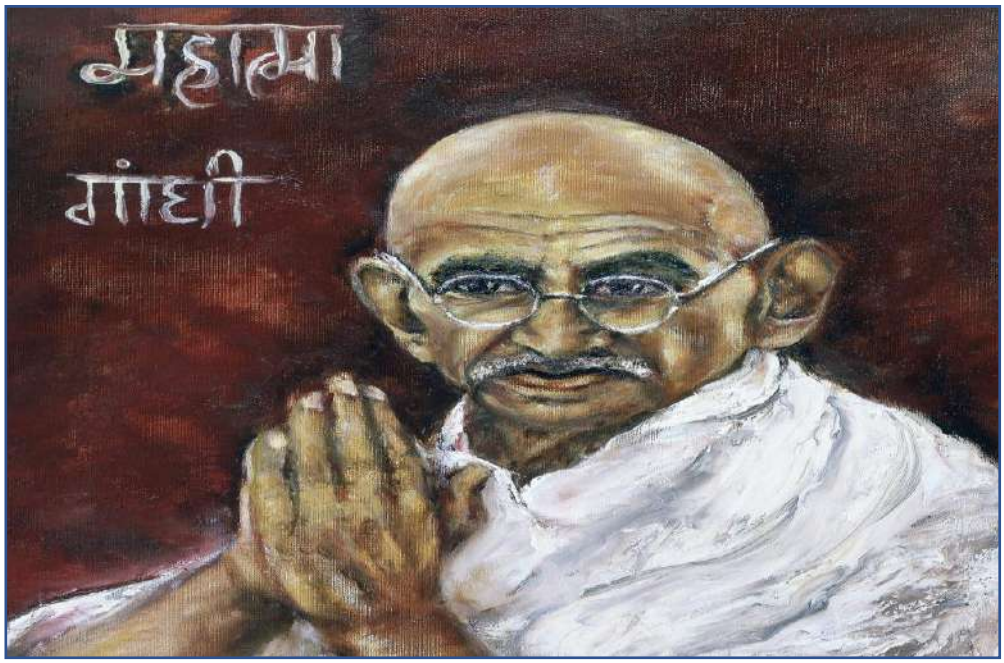

हेलो बच्चो,

आप सब कैसे हैं? आशा है सब अच्छे होंगे. आज हम बात करेंगे एक ऐसे राजनैतिक व्यक्तित्व की, जिन्होंने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया और स्वयं चरखे से बने वस्त्र पहने. सत्य, अहिंसा और प्रेम की राह पर चलकर हमें आजादी दिलाई.

अब आप समझ ही गए होंगे कि हम जिस व्यक्तित्व की बात कर रहे हैं वे मोहनदास करमचंद गाँधी हैं. जिन्हें हम प्यार से बापू कहकर बुलाते हैं. इनका जन्म 2 अक्टूबर 1869 ई० को गुजरात के पोरबंदर जिले में हुआ था. उनकी प्रारंभिक शिक्षा भी वहीँ पूर्ण हुई. 13 वर्ष की उम्र में उनका विवाह कस्तूरबा गाँधी से हो गया और 18 वर्ष की उम्र में वे वकालत की पढ़ाई करने इंग्लैंड चले गए.

वहाँ से लौटने के बाद गाँधी जी बिजनेसमेन दादा अब्दुल्ला के बुलावे पर उनके केस के सिलसिले में 1893 ई. को दक्षिण अफ्रीका गए. गाँधी जी को डरबन से

प्रिटोरिया जाना था. वे ट्रेन पर फर्स्ट क्लास की टिकट लेकर सफर कर रहे थे. उन दिनों भारतीय और अफ्रीकी लोगों को फर्स्ट क्लास डिब्बे में सफर करने की इजाज़त नहीं थी. गाँधी जी के पास फर्स्ट क्लास का टिकट होते हुए भी एक अंग्रेज ने उन्हें धक्का देकर बाहर निकाल दिया और उनका सामान भी बाहर फेंक दिया. गाँधी जी ने सर्दी के मौसम की एक रात स्टेशन पर ही बिताई. इस घटना ने उन्हें अंदर तक झकझोर कर रख दिया.

उन्होंने 22 अगस्त 1894 ई. में नेटाल राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की और वे दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के साथ हो रहे अत्याचार के खिलाफ़ खड़े हुए. वे दक्षिण अफ्रीका में लगभग 20 वर्षों तक रहे.

गाँधी जी भारत में 1915 ई. में गुजरात के अहमदाबाद में साबरमती आश्रम में रहे. १९२१ में गोपालकृष्ण गोखले जी के कहने पर उन्होंने राष्ट्रीय कांग्रेस की सदस्यता भी ली. 8 फरवरी 1921 ई. को गोरखपुर में गाँधी जी ने अपने एक संक्षिप्त उद्‌बोधन में ताश के बावन पत्तों के जरिए आजादी की लड़ाई का जीत का मंत्र दिया था. उन्होंने कहा था कि यदि भारत को गुलामी से बचाना है तो बादशाह को हटाना होगा और उसके लिए इक्का जरूरी है. यदि भारत का हर नागरिक एकजुट हो तो अंग्रेजी हुकूमत को स्वतः इस देश को छोड़कर जाना पड़ेगा.

गाँधी जी ने 1917 में चंपारण सत्याग्रह ,1918 में खेड़ा सत्याग्रह ,1930 में नमक सत्याग्रह और ऐसे ही न जाने कितने आंदोलन किए और ब्रिटिश शासन को झुकने पर मजबूर कर दिया. फलस्वरूप हमारे देश को 15 अगस्त 1947 को आजादी मिली.

हमें इतनी कठिनाई से मिली आजादी के मूल्य को समझकर एक जिम्मेदार नागरिक की भूमिका निभानी चाहिए.

पहेलियाँ

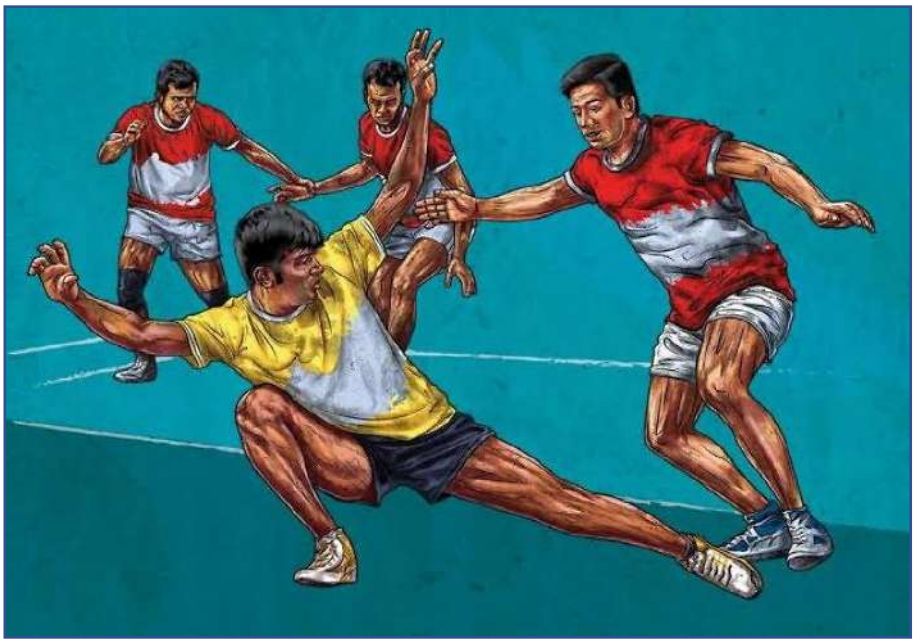

(1)

जंगल में रहता पर,
घास- फूंस न खाता.
जंगल की है शान,
राजा वो कहलाता.

(2)

दो दलों का खेल,
एक दल में खिलाड़ी सात.
उठा-पटक, पेल-धकेल,
हाथ चले, चले लात.

(3)

नाक में रखी चीज,

दोनों कान में लटके.

जमीन पर गिरकर,

आँखों के सामने चटके.

(4)

काँच से बनती हैं,

सुन्दर आकर्षक चमकीली.

मम्मी की कलाई में सजती,

लाल, हरी, नीली, पीली.

उत्तर:- 1. शेर, 2. कबड्डी, 3. चश्मा, 4. चूड़ियाँ

हंसगुल्ले

- एक आदमी होली के दिन ये गुनगुना रहा था
  घर में नहीं है पानी तो होली कैसे मनाऊ रे..!!
  घर में नहीं है पानी तो होली कैसे मनाऊ रे..!!
  उसका ये गाना सुनकर पड़ोसी ने कहा:
  पानी हो ना हो, होली तो मनाना चाहिए.
  उधार ले कर ही सही, साल में एक बार तो नहाना चाहिए !

- एक साधु था. उसे गाने का बहुत शौक था,
  लेकिन उसकी आवाज बहुत बुरी थी.
  होली के दिन भांग पीकर
  वह अपनी उसी फटी हुई आवाज में
  जोर-जोर से गाना गाने लगा - 'महबूबा, महबूबा...'
  गाना गाते हुए वह बेचारा भांग के नशे में नाले में जा गिरा.
  फिर नाले में उसकी आवाज आई -
  'मैं डूबा, मैं डूबा', अरे कोई तो बचाओ 'मैं डूबा, मैं डूबा'.

- लड़का - हर सन्डे के दिन आपके चेहरे पर रंग क्यों लगा होता है
  लड़की - अरे मैं हर सन्डे होली खेलती हूँ
  लड़का - क्यों ?
  लड़की - अरे हमारे स्कूल में टीचर ने बताया है कि “Sunday मतलब Holiday”

- जो लोग “बुरा न मानो, होली है” ये कहकर रंग डाल जाते हैं
  दिवाली आने पर आप भी “बुरा न मानो, दिवाली है”
  कहकर उनपर बम डाल देना ☺

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी -

सोना की होशियारी

एक हिरण शावक था, सोना। सोने जैसा रंग, बड़ी- बड़ी आंखें, बहुत फुर्तीला पर भोला-सा जब कुलांचें मारता हुआ दौड़ता तो कोई उसकी बराबरी न कर पाता.

सोना अपने झुंड के साथ जंगल से लगे घास के बहुत बड़े मैदान में रहता था. उसके दिन बड़ी मस्ती में बीत रहे थे.

जंगल में रहता था एक सियार भुरु, बहुत धूर्त और चालाक. एक दिन इसकी नज़र सोना पर पड़ी. उसके नन्हे और कोमल शरीर को देखते ही उसके मुंह से लार टपकने लगी. सोचा, चलो आज उसका पीछा किया जाए. पर थोड़ी ही देर में उसे समझ में आ गया कि सोना को पकड़ना उसके बस की बात नहीं.

मुंह लटकाए वह अपनी मांद में लौट आया. पर सोना की छवि उसकी आंखों से हट नहीं रही थी. वह रात भर तिकड़में भिड़ाता रहा. सुबह होते ही वह कबरा तेंदुए के पास पहुंचा और सोना के बारे में उसे बताया. कबरा के मुंह में भी पानी आ गया. उसने भुरु से कहा, भुरु, मैं उसे दौड़कर तो पकड़ नहीं पाऊंगा. हां, अगर

तुम उसे किसी तरह बहला - फुसलाकर जंगल में ले आओ तो बात बन जाएगी. मैं किसी पेड़ पर छुपा बैठा रहूंगा. जैसे ही वह पास आएगा मैं कूदकर उसे दबोच लूंगा.

फिर एक दिन भुरु सोना से मिला और प्यार का नाटक करते हुए उससे कहा, कैसे हो प्यारे भांजे !

सोना इस नए मामा को देखकर पहले तो चौंका पर धीरे-धीरे उसकी बातों में आ गया. फिर वही हुआ जिसका डर था. वह भुरु के साथ जंगल की ओर चल पड़ा.

आपके द्वारा हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम यहाँ प्रदर्शित कर रहे हैं.

चंद्रभान सिंह कंवर जी व्दारा पूरी की गई कहानी

सोना हिरण भूरु सियार के साथ चल तो पड़ा ।लेकिन उसे भूरु पर शक था, कि आज यह धूर्त भूरु मुझसे इतने प्यार से बात कर रहा है, जरूर दाल में कुछ काला है. मगर सोना को भी अपनी चलाकी पर पूर्ण विश्वास था. वह अपने आत्मविश्वास के बल पर भुरू केसाथ चल पड़ा. चलते चलते एक सुनसान जगह पड़ी,जहाँ पहुँचते ही भूरु का ईमान डगमगाने लगा. वह यह सोचने लगा कि यदि मैं इसे कबरा तेंदुआ के पास लेकर जाऊँगा, तो वह अकेले ही इसे चट कर जाएगा और मुझे कुछ भी खाने नहीं मिलेगा. तो क्यों ना मैं इसे यहीं चट कर जाऊँ. यह सोचकर वह वहीं सोना पर हमला बोल देता है,मगर सोना को पहले से ही इसका आभास था. वह पहले ही हमले के लिए तैयार था. फिर क्या था, दोनों में काफी देर तक जंग चली. सोना हिरन ने अपने सींग और अपने पैरों से वार कर भूरू को परास्त किया और अपनी जान बचाई

इधर भूरू भी सोना से मुँह की खा कर जंगल की ओर भागने लगा उसे काफी चोटें आई थी,उसके मुंह एवं पैर से खून निकल रहा था. उधर कबरा भूख के मारे काफी देर से भूरु और सोना की टीले पर बैठकर राह देख रहा था. बार-बार रास्ते की ओर देखता और भूख से तिलमिला उठता.

कुछ देर बाद उसे दूर कहीं पर एक पेड़ की छाँव के नीचे भूरू बैठा दिखाई दिया. जो वहाँ बैठकर अपने घावों को चाट रहा था. कबरा तेंदुए को लगा कि भूरु ने उससे गद्दारी की, और अकेले ही सोना को खा रहा है. यह सोचकर वह गुस्से से आग बबूला हो गया, और भूरु की ओर दौड़ा. उसने पीछे से भूरु के गर्दन को धर दबोचा जिससे भूरु की बची- खुची जान भी चली गई और वह मारा गया.

<u>कु. अरुणा लकड़ा (कक्षाआठवीं शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय, नवा पारा-कर्रा) व्दारा पूरी की गई कहानी</u>

जंगल में पहुँचते ही सोना बोला- "हम कहाँ जा रहे हैं?" सियार ने हँसते हुए कहा - "थोड़ी दूर और चलो, फिर बताता हूँ". अब सोना को डर लगने लगा. वह डर से कांपने लगा. सियार उसे उसी पेड़ के पास ले गया जिस पेड़ पर कबरा तेंदुआ बैठा था. तेंदुआ सोना को देखते ही झपटा, परंतु सोना भी कम नहीं था, वह जल्दी से उस जगह से हट गया इस कारण तेंदुआ नीचे गिर गया. तेंदुए का सिर पत्थर पर जा पड़ा और वहीं पर बेहोश हो गया. अब सियार ने सोना पर हमला बोल दिया,लेकिन सोना तेजी से भागने लगा. वह एक कुँए के पास जाकर रुक गया और सियार को देखा। सियार बहुत पीछे था. उसने जल्दी-जल्दी कुँए को पत्तों से ढक दिया. जैसे ही सियार उसके पास पहुँचा, उसने छलांग लगाई और कुँए के उस पार चला गया. परंतु सियार छलांग नहीं लगा सका और कुँए में जा गिरा. तब से सोना ने किसी भी अनजान जानवरों पर भरोसा नहीं किया और अपनी बुद्धिमानी से उन दोनों जानवरों से अपनी जान बचा ली.

<u>कन्हैया साहू(कान्हा)जी व्दारा पूरी की गई कहानी</u>

भुरू अपनी चिकनी चुपड़ी बातों से हिरण के रंग रूप की तारीफ किये जा रहा था, जिससे शावक को उस पर कोई शक नहीं हो रहा था. दोनों बातें करते- करते अब बीच जंगल में पहुँच गए थे. इधर कबरा तेंदुवा पेड़ पर बैठ कर इंतजार कर रहा था,थोड़ी देर बाद ही भुरू और हिरण शावक उस पेड़ के पास पहुँच गए जहाँ तेंदुवा पहले से ताक में बैठा था. जैसे ही शावक पेड़ के नीचे पहुँचा कबरा ने पेड़ से छलांग लगा दी ,सोना ने उसे छलांग लगाते हुए देख लिया था इसलिए तेंदुवा की पकड़ में आने से ही पहले ही कुलांचे मारकर भाग गया. इधर तेंदुवा का पंजा सीधे सियार के गले में धस गया और सियार के प्राण पखेरू उड़ गए.

अपनी फुर्ती के कारण आज वह अपनी जान बचाने में कामयाब हो गया. अब उसे भी यह बात समझ आ गई कि किसी को जाने बिना उस पर भरोसा करना अपने प्राण को संकट में डालना है. उस दिन के बाद सोना हिरण ने अनजान जानवरों से दूर रहने में ही अपनी भलाई समझ कर दूरी बना ली.

संतोष कुमार कौशिक जी व्दारा पूरी की गई कहानी

सोना, भुरु के साथ जंगल की ओर चल पड़ा. जंगल में कबरा तेंदुआ बेसब्री से सोना का इंतजार कर रहा था. जैसे ही सोना पास पहुंचा, उसने अपनी योजना के अनुसार पेड़ से कूदकर सोना को दबोच लिया. बेचारे सोना को समझ में नहीं आ रहा था कि इसके चंगुल से कैसे भागा जाए. ये लोग एक नहीं दो- दो हैं. तभी उसे अपनी मां की सीख याद आयी "मुसीबत आने पर अपनी बुद्धि का उपयोग करो और धीरज रखो".

सोना मन ही मन यह सोच रहा था और उधर भूरु और कबरा में सोना को पहले खाने को लेकर हुज्जत शुरू हो गई थी. सोना ने अपनी बुद्धि का उपयोग करते हुए भूरु से कहा, "मामाजी, तुम दोनों में लड़ाई ना हो इसके लिए मेरे पास एक उपाय है". दोनों थोड़ी देर के लिए शांत हो गए और सोना की बात सुनने लगे. सोना ने कहा, आप दोनों कुश्ती का एक खेल खेलो। कौन जीता, इसका निर्णायक मैं रहूंगा. इस खेल में जो जीतेगा वो मुझे पहले खाएगा. आप दोनों को मंजूर है तो खेल प्रारंभ करें.

भुरु और कबरा सोना की होशियारी समझ नहीं पाए और कुश्ती का खेल खेलने के लिए राज़ी हो गए. सोना को पहले खाने के चक्कर में दोनों अपना- अपना बल लगाकर कुश्ती लड़ने लगे. कभी भुरू नीचे कभी कबरा. दोनों में लड़ाई तेज होती गई. खेल लंबे समय तक चलता रहा. दोनों के शरीर से खून बहने लगा. दोनों घायल हो गए. अब वे इस स्थिति में नहीं थे कि अपने पैरों के बल खड़े हो सकें, और सोना को अपना भोजन बना सकें.

तभी सोना ने उन दोनों से कहा, " तुम दोनों मूर्ख हो जो एक दूसरे से लड़ाई कर रहे हो. जो भी प्राणी किसी को हानि पहुंचाता है, किसी के बारे में गलत सोचता है, उसे उसके कर्म का फल अवश्य मिलता है." उसी समय सोना की मां अपने बच्चे को खोजते हुए वहां पहुंच गई. सोना और उसकी मां अपने घर वापस लौट गए. भुरु और कबरा को घायल देखकर जंगल के दूसरे जानवरों ने उन्हें अपना भोजन बना लिया

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

गरियाबंद के जंगल में एक बहुत बड़े अधिकारी रहते थे. स्वभाव से वे बहुत अच्छे थे. सबकी सहायता करते थे. एक बार उनसे एक सन्यासी मिलने घर पर आए. घर में उनकी अच्छी सेवा की गयी. बच्चों ने भी उन्हें बहुत स्नेह दिया. सन्यासी ने उस अधिकारी से जंगल में रहकर विभिन्न बीमारियों के लिए जड़ी-बूटी खोजने हेतु अनुमति मांगी. उन्होंने जनहित को ध्यान में रखकर उस सन्यासी को जंगल में रहकर अपने काम को जारी रखने में पूरा सहयोग किया. उस अधिकारी का स्वभाव इतना बढ़िया था कि जंगल के जानवर भी बिना डरे उनके आसपास घूमते रहते थे और उनका भोजन भी खा लेते थे. एक बार लेटे-लेटे उस अधिकारी ने एक जानवर का झूठा किया हुआ फल बिना देखे खा लिया. उसके बाद वह बहुत बीमार हो गया. उनकी पत्नी और बच्चे बहुत परेशान हो गए. जंगल में आसपास कोई डाक्टर भी नहीं था.

अब इसके बाद क्या हुआ होगा, इसकी आप कल्पना कीजिए और कहानी पूरी कर हमें ई मेल **kilolmagazine@gmail.com** पर भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगल अंक में प्रकाशित करेंगे

चित्र देखकर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको कहानी लिखने के लिये यह चित्र दिया था -

इस चित्र पर हमें कहानियाँ प्राप्त हुई हैं, जो हम नीचे प्रकाशित कर रहे हैं -

लेखक –संतोष कुमार कौशिक

एक गांव में एक व्यक्ति अपने जानवरों को धो रहा था. जिससे नल का पानी अनावश्यक रूप से बह रहा था. एक बच्ची वहां पहुंचती है और कहती है-" चाचा जी, पानी को बाल्टी में लेकर अपने पशुओं की धोवें. अगर बाल्टी खाली हो तो बाल्टी फिर से भर लीजिए " वह व्यक्ति उसे डांट कर बोलता है, पानी मेरा है, मैं इसका बिल पटाता हूं. तुम छोटी सी लड़की मुझे सिखाने आई हो. चलो भागो यहां से " वह बच्ची कहती है-यही स्थिति रही तो एक दिन पानी के लिए तड़पोगे. ऐसा कहकर वहां से आगे बढ़ती है.

कुछ दूर चलने के वह देखती है दो महिलाएं नल के पास, बात करते हुए कपड़े साफ कर रही थीं. पानी अनावश्यक रूप से बह रहा था. उनके पास जाकर बच्ची उन्हें भी समझाती है. दीदी, पहले नल बंद कर लीजिए. कपड़ा साफ करने के बाद आवश्यकता अनुसार पानी का उपयोग कीजिए. ऐसा करोगे तो पानी की बचत होगी. महिलाएं भी उस बालिका को वहां से डांट कर भगा देती हैं. बच्ची पुनः कहती है-यही स्थिति रही तो एक दिन आप सब पानी के लिए तड़पोगे. कह कर आगे बढ़ जाती है.

आगे एक व्यक्ति ब्रश करते हुए मिलता है. खुले नल से पानी बह रहा होता है. उसे देख कर जल रानी कहती है-"भैया ब्रश करने के बाद आवश्यकता अनुसार पानी का उपयोग करिए, इस तरह पानी के नल को खोलकर ब्रश करोगे तो अनावश्यक रूप से पानी नष्ट होगा. यह हमारे लिए नुकसान दायक है. वह व्यक्ति भी उसे डांट कर भगा देता है.

इस तरह वह बच्ची गांव में भ्रमण करते हुए, पानी बर्बाद करने वालों को समझाती रही. लेकिन कोई उसकी बात नहीं सुनता. वह उदास होकर गांव वालों को सबक सिखाने को सोचती है. वास्तव में वह कोई साधारण बालिका नहीं, साक्षात जल माता थी जो एक बालिका का रूप धारण कर लोगों को समझाती घूम रही थी.

जल माता लोगों को सबक सिखाने दो दिन के लिए बाहर चली जाती है. उसके जाने के पश्चात तालाब, नदी, नाला, कुआं, नल सभी जगह पानी सूख जाता है.

गांव में पानी के लिए चारों तरफ हाहाकार मच जाता है. लोग दुकान में पानी का बॉटल लेने पहुंचते हैं, वहां भी पानी नहीं मिलता. लोग एक बॉटल पानी के लिए मुंह मांगी कीमत देने को तैयार रहता है. फिर भी पानी नहीं मिलता।अब गांव वालों को एक- एक बूंद पानी की कीमत क्या है यह समझ में आ गया. गांव वाले सोचने लगे कि छोटी सी बालिका हमें पानी बचाने का तरीका बताती रही लेकिन हम लोग उसे डांट कर भगा दिए. इसी का परिणाम है कि हम एक एक बूंद पानी के लिए तरस रहे हैं. हमें इसका प्रायश्चित करना चाहिए. हम सब शपथ लेते हैं कि पानी को बर्बाद नहीं करेंगे और जितनी आवश्यकता है, उतना ही पानी उपयोग करेंगे.

जल देवी समझ जाती है लोग सुधर गए हैं. अब पानी को बर्बाद नहीं करेंगे, ऐसा सोचकर पुनः उस गांव में वापस आती है. धीरे-धीरे तालाब,कुआं,नदी, नल में पानी पहले की तरह भर आता है. गांव वाले अब पानी का उपयोग आवश्यकता अनुसार करते हुए खुशी-खुशी से अपना जीवन निर्वाह करते हैं.

शिक्षक बच्चों को समझाते हैं कि देखो बच्चो, पानी का उपयोग हमें उचित मात्रा में जरूरत के अनुरूप करना चाहिए. पानी को व्यर्थ जाने नहीं देना चाहिए. इस कहानी में पानी बचत करने की, हमें जो शिक्षा मिली है उसे अपने व्यवहार में लाना चाहिए. तत्पश्चात भोजन अवकाश होता है। सभी बच्चे अपने टिफिन और पानी बॉटल रख कर भोजन करते हैं. भोजन के पश्चात बच्चे बॉटल का बचा पानी इधर-उधर फेंकने के बजाय, बाल्टी में बारी-बारी डालते हैं. उस पानी को विद्यालय के कर्मचारी द्वारा पौधे में डाला जाता है. बच्चों का यह व्यवहार देखकर शिक्षक बहुत खुश होते हैं. मन ही मन सोचते हैं कि जो मैं कहानी के माध्यम से शिक्षा दिया वह बच्चों के व्यवहार में झलक रही है.

पानी की कहानी

लेखक -प्रियंका सिंह

रोज की तरह मैं बच्चों को गतिविधि कराते हुए पढ़ा रही थी. सभी बच्चे संपर्क दीदी के साथ “माई दादाजी हेड अ फार्म” पोयम के साथ झूम रहे थे. तभी सीमा नाम की विद्यार्थी जो कक्षा दूसरी में पढ़ती है मेरे पास आई और बोली -मैम मुझे पेट में दर्द हो रहा है और उसकी समस्या मैं सुन ही रही थी कि प्रतिमा जो कक्षा तीसरी में पढ़ती है पास आई और बोलने लगी मैम मेरे सिर में दर्द हो रहा है तभी विमला आई और बोली मैम अनीता को चक्कर आ रहे हैं. मैं यह सब देखकर बहुत परेशान हो गई. मैंने तुरंत अपनी डॉक्टर मित्र को कॉल किया वह बिना विलंब किए विद्यालय आ गईं. मैंने उनसे इसका कारण जानने की कोशिश की. उन्होंने बताया कि इस उम्र में इस तरह की समस्याओं का मुख्य कारण शरीर में पानी की कमी हो सकती है. बच्चों के लिए उम्र के हिसाब से पानी की आवश्यकता बदलती रहती है. पानी पीने के बजाय शीतल पेय ज्यादा पीने से बच्चों के स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ने लगता है. बच्चों का वजन कम होने लगता है वे अपनी उम्र के दूसरे बच्चों की तुलना में सुस्त नजर आते हैं. यह सारी समस्याएँ डिहाइड्रेशन की वजह से हो रही है. मैंने व बच्चों ने उनकी बातों को बड़े गौर से सुना और उनकी सलाह मानते हुए दिन में अधिक से अधिक पानी पीने की बात कहीं और उन्हें धन्यवाद किया. अब मुझे कुछ अहम निर्णय लेने थे. मैं ऐसे तो बच्चों को परेशान होते नहीं देख सकती थी . मैंने बच्चों के लिए अगले दिन स्ट्रा लाई और सभी को स्वयं के गिलास या बोतल लेकर आने को कहा. मैंने कालखंड के मध्य में *"पानी पीने की घंटी"* का समय निर्धारित किया और घंटी बजते ही बच्चे पानी पीने लगे. बोतल का पानी खत्म होने पर विद्यालय में रखी टंकी और बाल्टी से पानी भरने लगे. मैंने पाया कि 1 से 2 सप्ताह में ही बच्चों के स्वास्थ्य में आश्चर्यजनक बदलाव हुआ. बच्चे पहले की अपेक्षा अधिक चंचल और फुर्तीले हो गए थे और अब उनकी सारी शिकायतें भी दूर हो गईं थी. मैंने बच्चों को छत पर पक्षियों के लिए पानी रखने को भी कह दिया है और घर के बाहर जानवरों के लिए भी पानी रखने की सलाह दी. साथ

ही अब हम अपने विद्यालय और समाज में जल संरक्षण के प्रति जागरूकता फैला रहे हैं. साथ ही बच्चों को यह सीख भी दी जा रही है कि हमें अपने पर्यावरण संरक्षण के प्रति भी सजग रहना चाहिए

अगले अंक हेतु चित्र

अब नीचे दिये चित्र को देखकर एक बढ़िया सी कहानी स्वयं या अपने बच्चों को चित्र दिखाकर लिखने का अवसर दें और हमें ई-मेल से **kilolmagazine@gmail.com** पर भेज दें. अच्छी कहानियां हम किलोल के अगल अंक में प्रकाशित करेंगे.

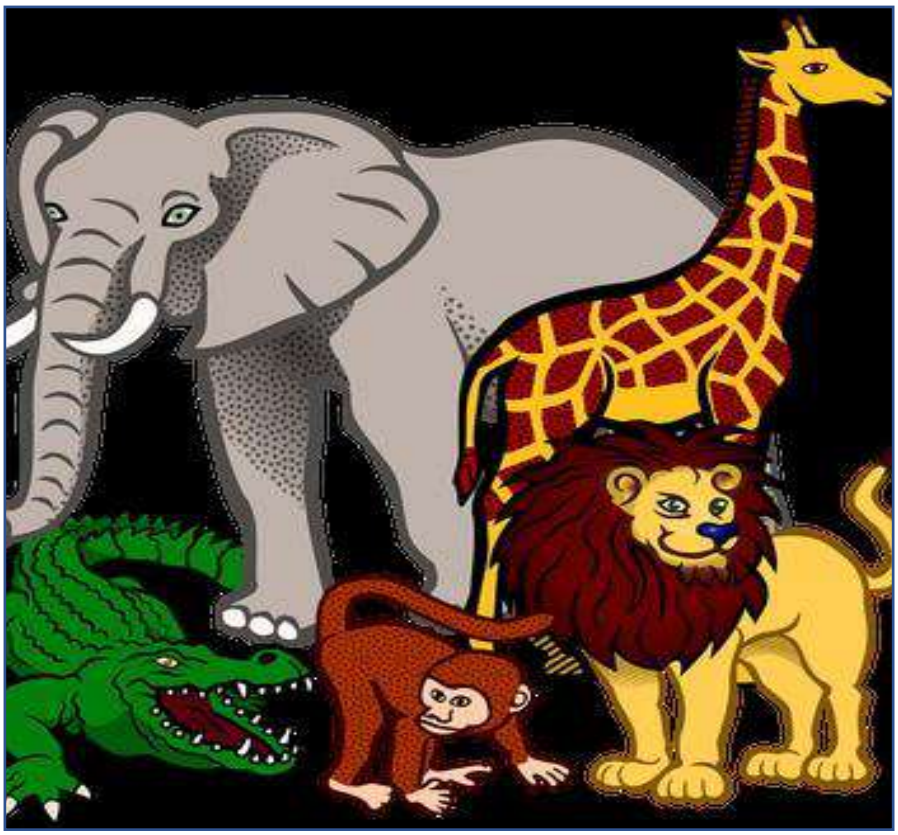

भाखा जनउला (छत्तीसगढ़ी शब्द पहेली)

भाखा जनउला (छत्तीसगढ़ी शब्द पहेली)

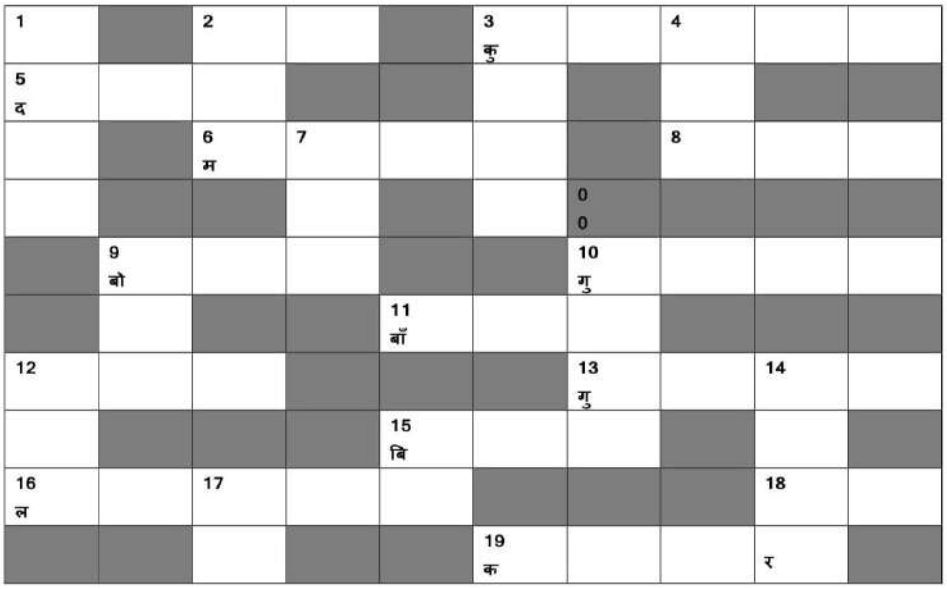

रचना- दीपककंवर (शिक्षक)

बाएँ से दाएँ:- 2.दूरी का मापन 3.मुर्गे के बांग देने का समय 5. दर्शन 6. दोपहर 8. रात 9. बकरा 10. पानी पूरी 11. शेष, बचा हुआ 12. पलाश 13. मीठा 15. फिसलन 16. बाल बच्चों वाली 18. नाम 19. तरबूज

ऊपर से नीचे:-1. पेटू/ खाने का लालची 2.बेर के आकार का खट्टा- मीठा फल 3. गन्ना 4. अरहर 7. लड़ाई 9. बेर 10. नरम-नरम 12. टमाटर 14. लौकी की बेल15. अमरूद 17. बीस की संख्या